>

Title: Need to undertake measures to check high level contamination of ground water in Balia district, Uttar Pradesh.

श्री नीरज शेखर (बलिया): विषाक्त भूजल के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए एक गहरा संकट छा गया है। विषाक्त भूजल के कारण अनेक रोगों का खतरा उत्पन्न हो गया है, जैसे चर्म रोग, कैंसर, शरीर के अन्य अंगों में विकृति आदि।

केन्द्रीय भूजल बोर्ड ने अपने प्रतिवेदन में उत्तर प्रदेश के 28 जिलों को विषाक्त भूजल प्रभावित माना है। यूनीसेफ की सहायता से उत्तर प्रदेश जल निगम ने भी राज्य के 51 जिलों में सर्वेक्षण कराया था। सर्वेक्षण के अनुसार विषाक्त भूजल के कारण 6377 जगह ऐसी हैं, जो राज्य में निवास के लिए उचित नहीं हैं। दोनों सर्वेक्षणों के अनुसार बलिया जिला सबसे ज्यादा प्रभावित है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्धारित मानक के अनुसार दूषित तत्वों की मात्रा 0.01 एमजी प्रति लीटर होना चाहिए। मगर यहां पर 0.50 एमजी प्रति लीटर है। भारतीय मानक ब्यूरों के निर्धारित मानक 0.05 एमजी प्रति लीटर से ऊपर विषाक्त जल भी मानव स्वास्थ्य के लिए घातक है। जांच करने पर बलिया में निर्धारित मानक से पांच गुणा अधिक पाया गया है। चिंता का विषय यह है कि इस जल से सिंचाई करने से अनाज और सब्जी भी विषाक्त होते हैं, जिसके खाने से मानव रोगों का शिकार बनता है।

इस जहर ने जिले में बहुत सी जानों को लील लिया है। लाखों लोग इससे प्रभावित हैं। प्रभावित जनता के लिए किसी सहायता या पुनर्वास की व्यवस्था आज तक नहीं की गई है।

अंत में, मैं केन्द्र सरकार से पुरजोर मांग करता हूं कि उच्च प्राथमिकता के आधार पर जरूरी कदम उठाए और लोगों को समस्या से निजात दिलाकर उसके पुनर्वास का इंतजाम करें।